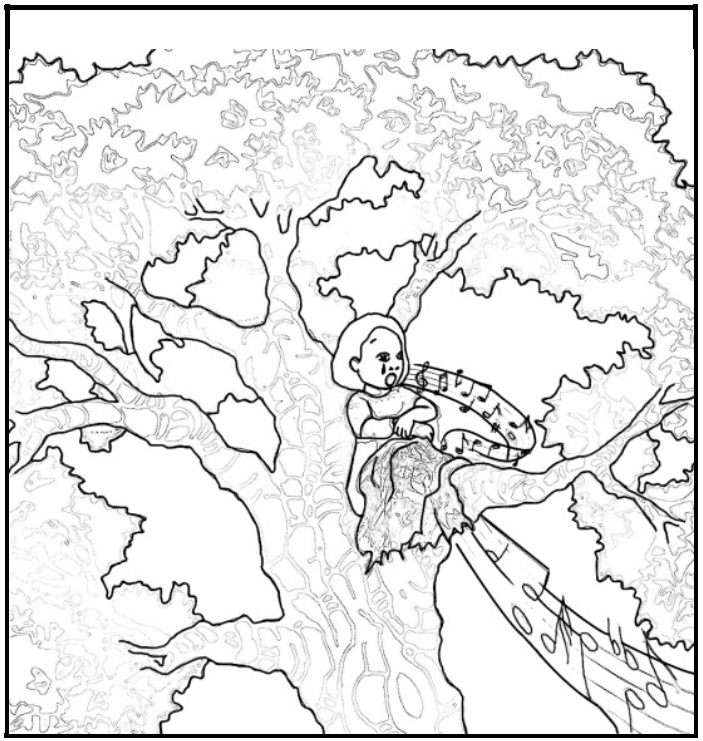

सिमबेगवीरे

- Rukia Nantale
- Benjamin Mitchley
- Nandani
- Hindi
- Level 5

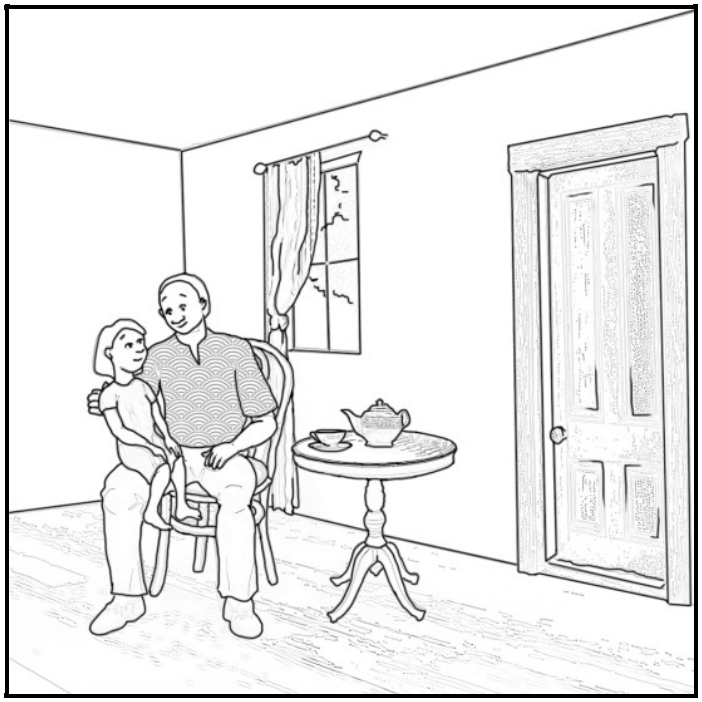

सिमबेगवीरे की माँ जब चल बसी, तब वह बहुत उदास थी। सिमबेगवीरे के पिता ने उसकी देखभाल करने की हर सम्भव कोशीश करी। धीरे-धीरे उन्होंने सिमबेगवीरे की माँ के बिना खुश रहना फिर से सीख लिया। हर सुबह वे बैठते और उस दिन की बात करते। हर शाम साथ में मिलकर रात का खाना बनाते। बर्तन धोने के बाद, सिमबेगवीरे के पिता उसे गृहकार्य में मदद करते।

एक दिने, सिमबेगवीरे के पिता रोज से देर घर आये। “कहाँ हो मेरे बच्चे?” उन्होंने बुलाया। सिमबेगवीरे अपने पिता के पास भागी। वह रुक गई जब उसने देखा कि उसके पिता ने एक महिला का हाथ पकड़ा है। “मैं चाहता हूँ कि तुम किसी विशेष से मिलो, मेरी बच्ची। यह अनीता है, वे मुस्कुराये।”

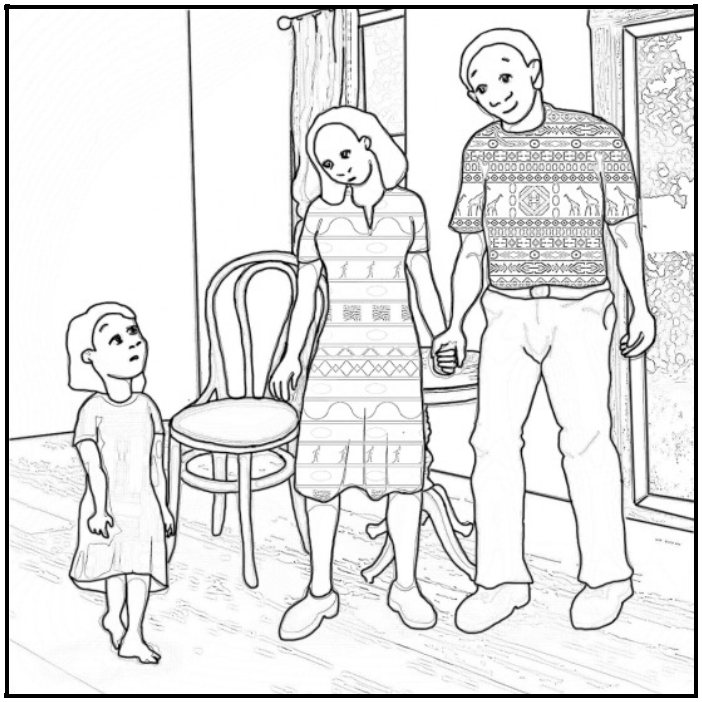

“नमस्ते सिमबेगवीरे तुम्हारे पिता ने बहुत कुछ बताया है तुम्हारे बारे में,” अनीता ने कहा। पर वो मुस्कराई नहीं और बच्ची के हाथ को पकड़ा। सिमबेगवीरे के पिता खुश और उत्साहित थे। वे तीनों के साथ रहने की बात कर रहे थे और उनका जीवन कितना अच्छा हो सकता है। “मेरी बच्ची, मैं आशा करता हु कि तुम अनीता को माँ के रूप में स्वीकार करोगी,” उन्हों ने कहा।

सिमबेगवीरे का जीवन बदल गया। अब वह ज्यादा समय तक सुबह में पिता के साथ नहीं बैठ पाती थी। अनीता ने बहुत सारा घर का काम उसे दे रखा था जिसके कारण वह शाम को विद्यालय के कार्य के समय थक जाती। रात के खाने के बाद थक कर वह बिस्तर पर जाती। उसे एक ही चीज़ आराम देती वह था उसकी माँ का दिया हुआ रंगीन कम्बल। सिमबेगवीरे के पिता यह नहीं देख पा रहे थे कि उनकी बेटी खुश नहीं है।

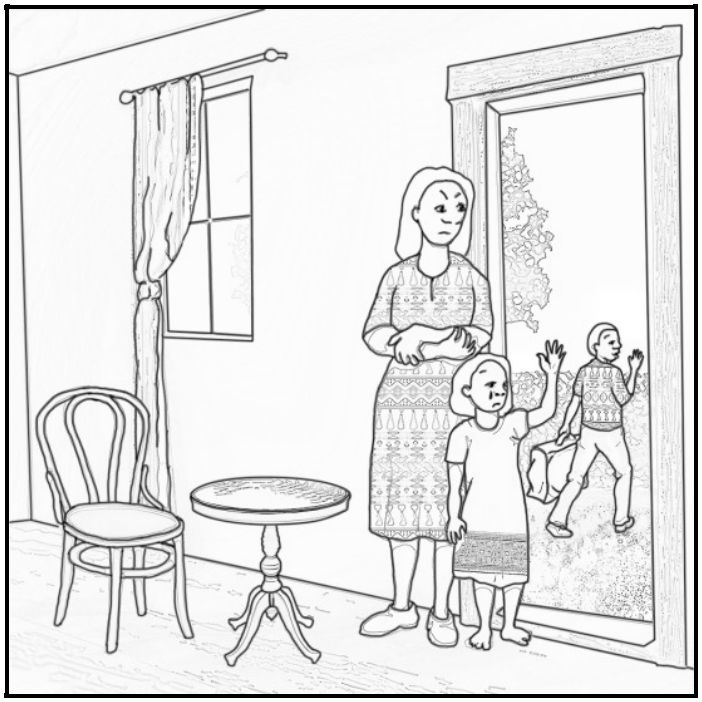

कुछ महीने बाद, सिमबेगवीरे के पिता ने उनसे कहा कि वह कुछ दिनों के लिए घर से बाहर रहेंगे। “मुझे काम से बाहर जाना है,” उन्होंने कहा। “पर मुझे पता है कि तुम दोनों एक दूसरे का ध्यान रखोगे।” सिमबेगवीरे का चेहरा उतर गया, लेकिन उसके पिता ने ध्यान नहीं दिया। अनीता ने कुछ नहीं कहा। वह भी खुश नहीं थी।

यह सिमबेगवीरे के लिए बहुत ही बुरा हुआ। अगर वह अपना काम नहीं करती या शिकायत करती तो अनीता उसे मारती। और वह औरत रात के खाने में अधिकतर खाना खा जाती, सिमबेगवीरे के लिए जूठन छोड़ती। सिमबेगवीरे हर रात अकेले में रोती और माँ के कम्बल को गले से लगा लेती।

एक सुबह, सिमबेगवीरे देर से उठी। “आलसी लड़की!” अनीता चिलाई। उसने सिमबेगवीरे को बिस्तर से खिंचा। उस अमूल्य कम्बल को नाखून से नोचा, और दो भागों में फाड़ दिया।

सिमबेगवीरे बहुत उदास हो गई। उसने घर से भागने का फैसला किया। उसने अपनी माँ के कम्बल के टुकड़ों को ले लिया और कुछ खाने के सामान को और फिर घर से चली गईी। वह उसी रास्ते पर चलने लगी जिससे उसके पिता गए थे।

जब शाम हुई वह ऊँचे पेड़ पर चढ़ गईी जो झरने के पास था और अपने लिए टहनियों के बीच में बिस्तर बना लिया। जब वह सोने लगी, उसने गाना गाया: “माँ, माँ, माँ, तुमने मुझे छोड़ दिया। तुम मुझे छोड़ कर चली गई और फिर कभी वापस नहीं आई। पिताजी अब मुझसे प्यार नहीं करते। माँ, तुम कब वापस आओ गी? तुमने मुझे छोड़ दिया।”

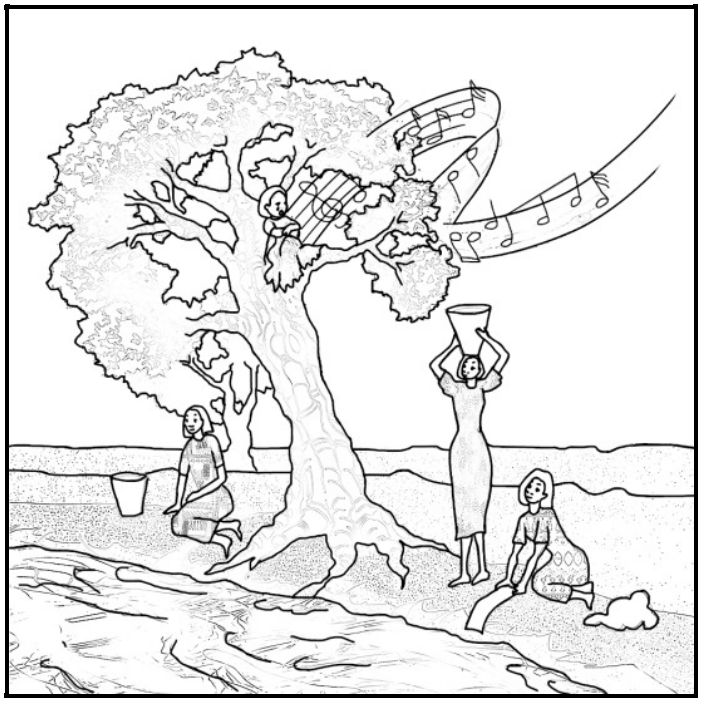

अगली सुबह, सिमबेगवीरे ने फिर से गाना गाया। जब औरते झरने पर कपड़े धोने आई थी, उन्होंने वह गाना सुना जो बड़े से पेड़ से आ रहा था। उन्होने सोचा यह केवल हवा है जो पत्तो से टकरा रही है और वह अपना काम करती रही। लेकिन उनमें से एक महिला ने बड़े ध्यान से गाना सुना।

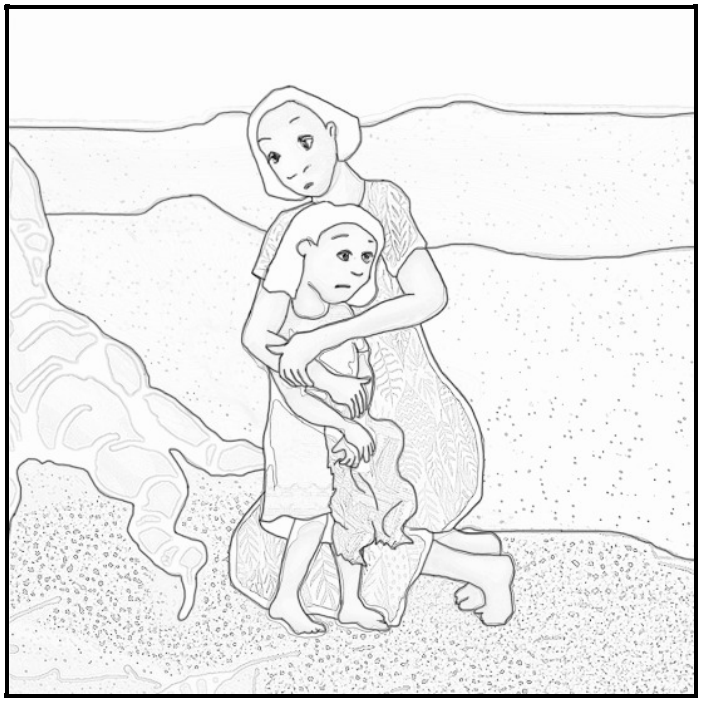

उस महिला ने पेड़ के अंदर देखा। जब उसने लड़की और रंगीन कम्बल के टुकड़ों को देखा, वह चिल्लाई, सिमबेगवीरे, “मेरे भाई की बेटी!” दूसरी महिला ने धोना रोक दिया और सिमबेगवीरे की पेड़ से उतरने में मदद करी। उसकी बुआ ने छोटी सी लड़की को गले से लगाया औ उसे दिलासा देने की कोशीश करी।

सिमबेगवीरे की बुआ बच्ची को घर ले गई। सिमबेगवीरे को गर्म खाना दिया और उसकी माँ के कम्बक के साथ बिस्तर में सुला दिया। उस रात, सिमबेगवीरे रोने लगी जब सोने गईी। लेकिन ये आँसू खुशी के थे। वह जानती थी कि उसकी बुआ उसका देख भाल अच्छे से करेगी।

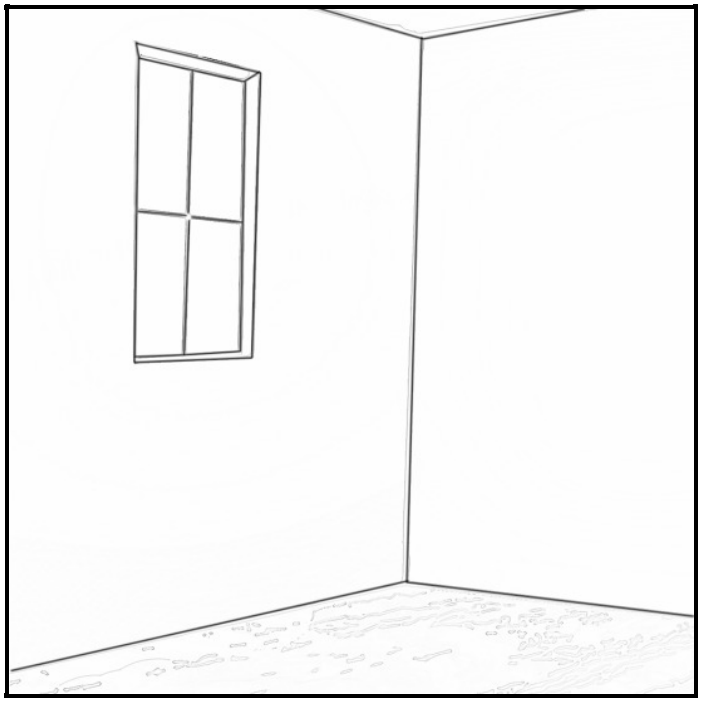

जब सिमबेगवीरे के पिता घर आये, उन्होंने उसका कमरा खाली पाया। “क्या हुआ अनीता?” उन्होंने ने भरे मन से पूछा। उस महिला ने बताया कि सिमबेगवीरे घर से भाग गई। “मैं चाहती थी कि वह मेरा सम्मान करे” उसने कहाँ। “शायद मैं ज्यादा सख्त हो गई ी” सिमबेगवीरे के पिता घर से निकल गए और झरने के तरफ़ चल दिये। उन्होंने ने अपनी बहन के गाँव में खोजना शुरू किया कि शायद उसने सिमबेगवीरे को देखा हो

सिमबेगवीरे अपनी फुफेरी बहन के साथ खेल रही थी जब उसने दूर से पिता को देखा। वह डर गई कि कही वह गुस्सा हो, इस लिए छिपने के लिए घर में भाग गई। लेकिन उसके पिता उसके पास गए उन्होंने कहा, “सिमबेगवीरे, तुमने अपने लिए सही माँ को खोज लिया है। वह जो तुमको समझती है और प्यार करती है। मुझे तुम पर नाज़ है और मैं तुमसे प्यार करता हूँ।” वह तैयार हो गए कि जबतक सिमबेगवीरे चाहे वह अपनी बुआ के साथ रह सकती है।

उसके पिता हर दिन उसके पास जाते। आखिरकार, वे अनीता के साथ आये उसने सिमबेगवीरे का हाथ पकड़ा “मुझे माफ़ करना छोटी, मैं गलत थी,” वह रोयी। “क्या तुम दोबारा मौका दोगी?” सिमबेगवीरे ने अपने पिता के तरफ चिता के साथ देखा। फिर उसने धीरे-धीरे कदम बढ़ाया और अनीता को गले लगाया।

अगले सप्ताह अनीता ने सिमबेगवीरे उसकी बुआ और फुफेरे भाई बहनों को अपने घर खाने पर बुलाया। क्या भोजन था! अनीता ने सभी खाना सिमबेगवीरे के पसंद का बनाया था, सभी तब तक खाते रहे जब तक उनका पेट नहीं भर गया। फिर छोटे खेल रहे थे जब तक बड़े बात कर रहे थे। सिमबेगवीरे को अच्छा लग रहा था साथ ही बहादुर महसूस कर रही थी। उसने फैसला लिया जल्द ही, बहुत जल्द, वह घर लौटेगी अपने पिता और सौतेली माँ के साथ रहने के लिए।

Storybooks Outline

global-asp.github.io/storybooks-outline

सिमबेगवीरे

Written by: Rukia Nantale
Illustrated by: Benjamin Mitchley
Translated by: Nandani

This story originates from the African Storybook (africanstorybook.org) and is brought to you by Storybooks Outline in an effort to provide children's stories in the world's many languages.

This work is licensed under a Creative Commons Attribution 3.0 International License.